दिव्य देह में वह साक्षात् श्रीभगवान् का दर्शन करता है। वह उनसे संभाषण भी कर सकता है। इतना ही नहीं, वह श्रीभगवान् को तत्त्व से जान जाता है। स्मृति में भी कहा है कि भगवद्धामों में सब जीवों का श्रीभगवान् के समान ही दिव्य वपु है। भिन्न-अंश जीवों और स्वांश विष्णुमूर्ति में वहाँ सारूप्य है। भाव यह है कि मुक्ति-काल में जीव को भगवत्कृपा से दिव्य कलेवर की प्राप्ति होती है।

मम एव अंशः शब्द का बड़ा गम्भीर आशय है। श्रीभगवान् का भिन्न-अंश किसी प्राकृत वस्तु के भग्न अंश जैसा नहीं है। पूर्व में, दूसरे अध्याय में कहा जा चुका है कि आत्मतत्त्व का छेदन नहीं किया जा सकता। आत्म-कण तो वस्तुतः प्राकृत चिन्तन का विषय ही नहीं है। यह कोई जड़ पदार्थ नहीं है, जिसे भग्न करके फिर जोड़ा जा सके। इस श्लोक में आए **सनातन** शब्द से यह स्पष्ट हो जाता है। श्रीभगवान् के भिन्न-अंश शाश्वत् हैं, जैसा दूसरे अध्याय के प्रारम्भ में उल्लेख है—**देहिनोऽस्मिन् यथा देहे**, प्राणीमात्र की देह में श्रीभगवान् का भिन्न-अंश है। देह-बन्धन से मुक्त होने पर वह भिन्न-अंश अपने दिव्य विग्रह को फिर से प्राप्त होकर भगवद्धाम में श्रीभगवान् के संग में आनन्द करता है। इसका यह भी भाव है कि जीव श्रीभगवान् का भिन्न-अंश है, इसलिए वह चिद्गुणों में उन्हीं के समान है, जैसे स्वर्ण का एक कण भी स्वर्ण है।

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।।८।।

शरीरम्=शरीर को; **यत्**=जिस; **अवाप्नोति**=प्राप्त होता है; **यत्**=जो; **च**=तथा; **अपि**=भी; **उत्क्रामति**=त्यागता है; **ईश्वरः**=देह का स्वामी जीव; **गृहीत्वा**=ग्रहण करके; **एतानि**=इन्द्रियों को; **संयाति**=जाता है; **वायुः**=वायु; **गन्धान्**=गन्ध को; **इव**=जैसे; **आशयात्**=गन्ध के स्थान (आश्रय) से।

अनुवाद

जैसे वायु गन्ध के स्थान से गन्ध को ग्रहण करके ले जाता है, वैसे ही देह का स्वामी जीव प्राकृत-जगत् में जिस शरीर को त्यागता है, उससे अपनी सब स्थूल-सूक्ष्म इन्द्रियों को ग्रहण कर दूसरे शरीर में ले जाता है।।८।।

तात्पर्य

जीव को ईश्वर कहने का अर्थ यह है कि वह अपनी देह और इन्द्रियों का स्वामी है। वह स्वेच्छा से उच्च-अधम किसी भी योनि में देहान्तर कर सकता है। इस विषय में उसे आंशिक स्वतन्त्रता है। उसका देहान्तर किस शरीर में होगा, यह उसी पर निर्भर करता है। जीवन में उसने जिस चेतना का विकास किया है, मृत्यु-काल में वह उसे अगले प्रकार के शरीर में ले जायगी; यदि अपनी चेतना को कुत्ते-बिल्ली के स्तर पर रखा है, तो कुत्ते-बिल्ली की योनि में ही उसका देहान्तर होगा। इसी प्रकार, जिसकी चेतना दैवी गुणों पर एकाग्रित है, उसे देव-शरीर मिलेगा। अतएव इसमें सन्देह नहीं कि